ISSN : 2395-4132

THE EXPRESSION

An International Multidisciplinary e-Journal

Bimonthly Refereed & Indexed Open Access e-Journal

The Expression Journal

Impact Factor 3.9

Vol. 5 Issue 2 April 2019

Editor-in-Chief : Dr. Bijender Singh

Email : editor@expressionjournal.com

www.expressionjournal.com

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

आर्य समाज का इतिहास एवं नवयुवकों पर इसका प्रभाव (1647 ई0 – 1947 ई0) : एक शोधात्मक अध्ययन : जनपद शाहजहॉपुर के सन्दर्भ में।

डा. पद्मजा मिश्रा
प्रवक्ता : इतिहास
रूहेलखण्ड डिग्री कालेज, रौजा,
शाहजहॉपुर (उ0प्र0)

Abstract

जिस समय पाश्चात्य् प्रभाव से अधिकांश भारतवासियों में स्वधर्म स्वभाषा, स्वराष्ट्र, स्वदेशी की भावना पूर्णता लुप्त हो गई थी तथा भारतवासियों में आत्म गौरव एवं आत्मविश्वास सुषुप्तावस्था में पहुँच गया था। ऐसे घोर निराशावादी समय में युगदृष्टा, वेद पुरूष, राष्ट्रीय पुर्नजागरण के अग्रदूत के रूप में महर्षि दयानन्द सरस्वती सामने आये जिन्होने मानव जाति के सर्वांगीण विकास एवं उत्थान के लिये चैत्र प्रतिपदा सम्वत् 1932 (8 अप्रैल, 1875) को गिरगॉव (मुम्बई) में डा. मानिक चन्द्र की वाटिका में आर्य समाज की स्थापना की। इस स्थापना के फलस्वरूप बुद्धिजीवियों में एक नई आशा, नई प्रेरणा, नई शक्ति तथा नई ऊर्जा का संचार हुआ। तत्पश्चात्य् देश के कोने–कोने में आर्य समाज संगठन की स्थापना होने लगी।

Keywords

सुषुप्ता, युगदृष्ट्रा, वैदिक परम्परा, आध्यात्मिक खोज, उत्कर्ष

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

आर्य समाज का इतिहास एवं नवयुवकों पर इसका प्रभाव (1647 ई0 – 1947 ई0) : एक शोधात्मक अध्ययन : जनपद शाहजहॉपुर के सन्दर्भ में।

डा. पद्मजा मिश्रा
प्रवक्ता : इतिहास
रूहेलखण्ड डिग्री कालेज, रौजा,
शाहजहॉपुर (उ0प्र0)

प्रमुख हिन्दु समाज सुधार आन्दोलन में आर्य समाज प्रमुख था। उत्तरी भारत में समाज सुधार का कार्य आर्य समाज ने सर्वप्रथम शुरू किया। आर्य समाज आन्दोलन का प्रसार प्रायः पाश्चात्य प्रभावों के विरोध के रूप में हुआ। आर्य समाज के प्रणेता स्वामी दयानन्द तथा उनके गुरू स्वामी विरजानन्द पाश्चात्य् संस्कृति के विरूद्ध थे, वे दोनों ही शुद्ध वैदिक परम्परा मे विश्वास करते थे और उन्होने ''पुनः वेदों की ओर चलो'' का नारा लगाया।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती फर्रूखाबाद में 9 मई, 1876 को रूकने के बाद काशी, जौनपुर, अयोध्या, लखनऊ, शाहजहॉपुर, बरेली में वैदिक धर्म की दुंदभि बजाते हुये गये। स्वामीजी पुनः 1 नवम्बर, 1876 बुधवार कार्तिक सुदी पूर्णिमा को लखनऊ से शाहजहॉपुर पधारे तथा 5 नवम्बर, 1876 तक श्रीराम खजांची के बगीचे में (जापान बाबू की कोठी के पास) रहे और प्रातः 9 बजे तक तथा सायं 5 से 8 बजे तक जिज्ञासुओं की शकांओं का समाधान तथा उनके प्रश्नों के उत्तर देते थे। स्वामीजी की अद्भुत प्रतिभा, प्रगल्य पांडित्य, अकाट्य तर्क तथा उनका कहना–''मैं लोगों को बन्दी करने नहीं आया हूँ बल्कि उनको स्वतंत्र करने आया हूँ'' के राष्ट्रीय सन्देश सुनने के बाद अनेकों बुद्धिजीवी उनके विचार शिष्य बन गये और एक स्वर में वेद एवं वैदिक संस्कृति की श्रेष्ठता को स्वीकार कर लिया।

प्यारेलाल मुक्ता प्रसाद, बख्तावर सिह, शिवलाल वकील तथा हरगोविन्द बनर्जी आदि ने मिलकर वख्तावर सिंह (मुजफ्फरपुर निवासी, शाहजहॉपुर में प्रकाशित ''आर्य दर्पण'' के सम्पादक एवं राजकीय हाईस्कूल शाजहॉपुर के सहायक अध्यापक) के मकान पर ''चैत्र सुदी प्रतिपदा सम्वत् 1834 (सन् 1877) में शाहजहॉपुर में आर्य समाज की स्थापना की'' जिसका नगर की प्रबुद्ध जनता ने हार्दिक स्वागत किया। बताया जाता है कि महार्षि दयानन्द सरस्वती एवं महात्मा गांधी स्वयं भी इस समाज में पधारे थे।

आर्य समाज के जन्मदाता स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म 1824 में गुजरात में काठियाबाढ़ के मौरवी राज्य के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता श्रीकृष्ण जी तिवारी तथा माता यशोदा बाई थी। उनके पिता वेदों के विद्वान थे और उन्होने ही इनको वैदिक बाड्मय तथा न्याय दर्शन आदि की दीक्षा दी थी। छोटी उम्र से ही दयानन्द सरस्वती मूर्ति पूजा पर प्रश्न तथा जीवन और मृत्यु जैसे गूढ विषयों पर चिन्तन करने लगे। वैदिक जिज्ञासा में वे 21 वर्ष की आयु में गृह परित्याग कर पन्द्रह वर्षो तक देश के कोने–कोने में भ्रमण करते रहे। सन् 1860 ई0 में उनकी भेट प्रज्ञाचक्षु (सूरदास) स्वामी विरजानन्द से हुई तथा वे उनसे बहुत प्रभावित हुये और उनके शिष्य बन गये। सन् 1868 ई0 में दयानन्द ने अपने एकांकी सन्यास एवं आध्यात्मिक खोज का परित्याग कर दिया और सक्रिय धर्म एवं समाज सुधार के कार्य में जुट गये।

राजा राममोहन राय द्वारा ब्रह्म समाज की स्थापना पहले ही हो चुकी थी, उससे ही प्रभावित होकर उन्होने वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिये एक समाज संगठित करने का निर्णय लिया। केशवचन्द्र सेन की सलाह से उन्होने अपने विचारों को संस्कृत के बदले उत्तर भारत की लोकप्रिय भाषा हिन्दी में व्यक्त करने का निर्णय लिया।

यद्यपि शाहजहॉपुर आर्य समाज की स्थापना सन् 1877 ई0 में हो चुकी थी परन्तु प्रारम्भिक वर्षो में इस समाज की दशा संतोषजनक नहीं रही, एक समय ऐसा भी आया जबकि समाज के साप्ताहिक अधिवेशन भी नियमपूर्वक नहीं हो रहे थे। यही कारण है कि इस समाज के प्रारम्भिक वर्षो के विवरण उपलब्ध नहीं है।

स्वामी दयानन्द की प्रेरणास्वरूप शाहजहॉपुर में स्थापित आर्य समाज द्वारा अनेक समाज सुधार के कार्यक्रम चलाये गये, जिससे जनता के सामाजिक जीवन स्तर में बदलाव आया तथा क्षेत्र की महिलाओं एवं शूद्रो की स्थितियों में भी सुधार आया। परन्तु दुर्भाग्यवश सन् 1930 ई0 में आर्य समाज क सदस्यों मे आपसी मनमुटाव हो गया जो प्रमुखतः ब्राह्मण एवं कायस्थ जाति के आपसी मतभेद के कारण उत्पन्न हुआ था।

परिणामतः यह मतभेद सिविल न्यायलय तक पहुँच गये। तत्कालीन समय में आर्यसमाजी डा. तिनकूलाल, कायस्थों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। सन् 1950 में यह विवाद तभी समाप्त

हआ जब न्यायालय द्वारा दोनों आर्यसमाजियों के बीच सम्पत्ति (आर्य समाज की) आदि का बटवारा कर दिया गया तथा दोनों ने अपनी अलग–अलग शाखाएं स्थापित कर ली।

पं0 छोटेलाल के द्वारा स्थापित आर्य समाज को रजिस्टर्ड आर्य समाज के नाम से जाना गया तथा इन्होने प्रमुखतः शाहजहॉपुर के ब्राह्मण एवं वै"य वर्ग के आर्य समाजियों का प्रतिनिधित्व किया जबकि डा. तिनकुलाल के आर्य समाज में प्रमुखतः कायस्थ वर्ग के आर्य समाजियों का नेतृत्व किया।

आर्य समाज की तत्कालीन सम्पत्ति आर्य कन्या पाठशाला, अनाथालय, आर्य समाज मदिर, आर्य महिला विद्यालय आदि थी।

आर्य समाज शाहजहॉपुर द्वारा संचालित अन्य तत्कालीन आर्य संस्थायें:–

1. **आर्य कुमार सभाः**–वैदिक धर्म की विशेषताओं से प्रभावित होकर युवक आर्य समाज में आने लगे। युवको ने सन्यासियो, विद्वानों के ओजस्वी सारगर्भित ज्ञान का रसास्वादन किया और उनमें एक नवीन चेतना जागृत हुई। समस्त नवयुवकों में सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय चेतना का समावेश किये जाने के उद्देश्य से उन्होने सन् 1920 में आर्य समाज मंदिर में ''आर्य कुमार सभा'' की स्थापना की। पं. राम प्रसाद बिस्मिल इसके प्रेरणा स्रोत एवं संस्थापक सदस्य थे। इस सभा की बैठके प्रत्येक शुक्रवार को होती थी। वहीं पर धार्मिक साहित्यों का पठन–पाठन, विषय विशेष पर निबन्ध लेखन और वाद–विवाद होता था। इसी सभा के माध्यम से बिस्मिल एक निर्भीक एवं कुशल वक्ता बनें। बहुधा आर्य कुमार सभा के नवयुवक मिलकर मेलों एवं बाजारों मे व्याख्यान देकर आर्य समाज के सिद्धांन्तों का प्रचार करते थे। आर्य कुमार सभा की लोकप्रियता तथा श्रृद्धापूर्वक कार्य करने की प्रवृत्ति कुछ उपद्रवियों को पसन्द नहीं आयी और उन्होने बलपूर्वक आर्य समाज भवन मं ताले डाल दिये। परिणामस्वरूप कुछ समय उपरान्त यह सभा टूट गई।
2. **स्त्री आर्य समाज, शाहजहॉपुरः**–आर्य समाज के विद्वानो के प्रचार–प्रसार के कारण स्त्रियो में एक नवीन चेतना का सृजन हुआ और उन्होने सन् 1926 ई0 में ''स्त्री आर्य समाज, शाहजहॉपुर'' का गठन किया। इस समय श्रीमती यशोदा देवी, स्त्री आर्य समाज की प्रधान थी तथा श्रीमती श्याम सुन्दरी देवी मन्त्री, श्रीमती राम दुलारी कोषाध्यक्ष तथा

श्रीमती महेश्वरी देवी सक्रिय कार्यकर्ता थीं तथा वर्ष 1929 ई0 में इसका सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि संयुक्त प्रान्त (वर्तमान में उत्तर प्रदेश) से कर दिया गया।

आर्य महिला विद्यालय सन् 1937 ई0 में आर्य स्त्री समाज के अन्तर्गत कार्य करने लगा जो कालान्तर में आर्य महिला डिग्री कालेज बना, जो वर्तमान समय में क्षेत्र में लगभग 3500 छात्राओं को शिक्षा प्रदान कर रहा है। आर्य महिला डिग्री कालेज बनाने के लिये भूमिदान राजा पुवांया ने किया था।

नवयुवको पर आर्यसमाज का प्रभाव–आर्य समाजी स्वामी सोमदेव सरस्वती के क्रान्तिकारी विचारों का प्रभाव आर्य जनों के साथ–साथ युवकों पर भी पड़ा। पं0 रामप्रसाद बिस्मिल आपके विचार शिष्य बनें तथा सन् 1910 ई0 में आर्य समाजी बनने के बाद आर्य समाज में रहने लगे।

यह पूज्य स्वामी सोमदेव सरस्वती का प्रभाव था कि स्वतंत्रता की चिंगारी का प्रस्फुटन इसी आर्य समाज की पावन भूमि से हुआ। यह आर्य समाज क्रांतिकारियों की तपस्थली बन गया। श्री अशफ़ाक उल्लाखां, हरगोविन्द, रोशन सिंह, मुरारीलाल, गेंदालाल दीक्षित जैसे अनेकों देशभक्त पं0 रामप्रसाद बिस्मिल के साथ आर्य समाज में एकत्रित होते थे तथा यज्ञ में भी भाग लेते थे।

इस प्रकार आर्यसमाज शाहजहॉपुर ने जनपद के नवयुवकों में वैदिक संस्कृति एव देशभक्ति की भावना को भर कर समाज का उत्थान किया।

आर्य समाज शाहजहॉपुर के सामाजिक सुधार कार्यक्रमों से प्रभावित होकर जनपद की अधिकांश जनता आर्य समाज की ओर उन्मुख हुई जिसमें सभी जाति, धर्म के लोग सम्मिलित थे तथा सभी ने अपना सामाजिक स्तर में सुधार किया।

शाहजहॉपुर आर्य समाज (हिन्दु–मुस्लिम एकता का प्रतीक)– शाहजहॉपुर आर्य समाज को हिन्दु–मस्लिम एकता के प्रतीक के रूप में जाना जाता है, यद्यपि आर्य समाज वैदिक धर्म का पोषक था तथापि आर्य समाज मे आने वाले मुसलमानों की संख्या कम न थी।

आर्यसमाजी रामप्रसाद बिस्मिल एवं अशफ़ाक उल्लाखां की मित्रता बेमिसाल थी, स्वयं राम प्रसाद बिस्मिल ने अपने मित्र अशफांक उल्लाखां से कहा था कि हमारी मित्रता पर सबको आश्चर्य था कि एक कट्टर आर्यसमाजी और मुसलमान में मेल कैसा? आर्य समाज मन्दिर में मेरा निवास था किन्तु हम इन बातों की किंचित मात्र चिन्ता न करते थे, ...मुझमे तुममे कोई मतभेद न था। बहुधा मैने और तुमने एक थाली में भोजन किया। मेरे हृदय से यह विचार जाता रहा कि हिन्दु मुसलमान मे कोई भेद होता है। तुम मुझे सदैव राम कहा करते थे।

इस प्रकार राम प्रसाद बिस्मिल के ये उद्गार आर्यसमाज में हिन्दु मुस्लिम एकता की सच्ची मिसाल पेश करते है।

आर्यसमाज ने हरिजनों के पति समाज में समानता का संदेश दिया जिसका प्रमाण आर्य समाज मंन्दिर में हरिजनों का प्रवेश व आर्य समाजियों व हरिजनों का एक साथ खाना था। आर्य समाज के सानिध्य से इन्हें मौलिक मानव अधिकारों का ज्ञान हुआ और वे स्वयं अपने अधिकारों की रक्षा के लिये आवाज उठाने लगे। इस प्रकार उच्च जातियो द्वारा निम्न जातियों के सदियों से चले आ रहे शोषण के विरूद्ध एक शक्तिशाली स्थिति में उत्तरोत्तर सुधार हुआ।

निष्कर्ष—इस प्रकार शोधपत्र के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि आर्यसमाज में न केवल शाहजहॉपुर के युवा वर्ग के जीवन का उत्कर्ष किया वरन् दलितों और स्त्रियों के जीवन में भी नई आशा एवं उत्साह का संचार किया, अतः जनपद शाहजहॉपुर में तत्कालीन समय में आर्य समाज की स्थापना एवं इसका विकास शाहजहॉपुर के उत्कर्ष के लिये वरदान सिद्ध हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ग्रोवर बी. एल.—आधुनिक भारत का इतिहास
2. डा0 जय सिंह सरोज, आर्यसमाज (रजि0)का 125 वर्षीय गौरवपूर्ण इतिहास, स्मारिका चिंगारी, प्रकाशक—शहीद पुस्तकालय एवं वाचनालय, आर्यसमाज (रजि0). टाउनहाल रोड, शाहजहॉपुर (उ0प्र0)
3. सत्यकेतु विद्यालंकार तथा वेदालंकार, आर्य समाज का इतिहास (प्रथम भाग) प्रारम्भ से सन् 1883 ई0 तक, आर्य स्वास्थ्य केन्द्र 1/32, सफदरगंज इन्क्लेव नई दिल्ली
4. शरण गहे अर्थात शरण में जायें अथवा शरण ग्रहण करें।
5. आर्य ग्रन्थ अर्थात वैदिक ग्रन्थ
6. आप्त पुरूष अर्थात ऐसे पुरूष जो वैदिक धर्म के उत्थान का कार्य करें।
7. जब प्राणी जन्म.मृत्यु के बंधन से मुक्ति पा लेता है, तो उस अवस्था को मोक्ष कहते है।
8. श्रीवास्तव के.सी. प्राचीन भारत का इतिहास
9. स्वामी दयानन्द सरस्वती की जीवनी
10. आर्य समाज पत्रिका शाहजहॉपर